International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 1032-1034

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 1032-1034
www.allresearchjournal.com
Received: 22-11-2016
Accepted: 25-12-2016

पूनम कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
पूनम कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सिन्धु सभ्यता कालीन शिल्प, उद्योग, वाणिज्य, व्यापार एवं नागरीय जीवन

पूनम कुमारी

सारांशः
सिन्धु सभ्यता शिल्प तथा उद्योग धन्धे में कताई–बुनाई, आभूषण, बर्तन और औजार आदि कई वस्तुओं का निर्माण किया करते थे। यातायात के लिए बैलगाड़ी और भैसागाड़ी का प्रयोग कर देश–विदेश से व्यापार किया करते थे। सिंधु सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता के लोग कृषि और पशुपालन के साथ–साथ शिल्प कला तथा उद्योग, वाणिज्य, व्यापार में भी बढ़–चढ़कर रूचि लिया करते थे। सिन्धु घाटी सभ्यता के हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल आदि नगरों की समृद्धि का प्रमुख स्रोत व्यापार और वाणिज्य था। यदि व्यापारिक संगठन की बात की जाए तो निश्चय ही इतनी दूर के देशों से बड़े पैमाने पर इतर क्षेत्रों से व्यापार हेतु अच्छा व्यापारिक संगठन रहा होगा. नगरों में कच्चा माल आस–पड़ोस तथा सुदूर स्थानों से उपलब्ध किया जाता था। वास्तव में सिन्धु घाटी सभ्यता अपनी विशिष्ट एवं उन्नत नगर योजना के लिए विश्व प्रसिद्ध है क्योंकि इतनी उच्चकोटि का "वस्ति विन्यास" समकालीन मेसोपोटामिया आदि जैसे अन्य किसी सभ्यता में नहीं मिलता. सिन्धु अथवा हड़प्पा सभ्यता के नगर का अभिविन्यास शतरंज पट की तरह होता था, जिसमें मोहनजोदड़ो की उत्तर–दक्षिणी हवाओं का लाभ उठाते हुए सड़कें करीब–करीब उत्तर से दक्षिण तथा पूर्ण से पश्चिम को ओर जाती थीं। इस प्रकार चार सड़कों से घिरे आयतों में "आवासीय भवन" तथा अन्य प्रकार के निर्माण किये गये थे।

कूट शब्दः सिन्धु सभ्यता, कालीन शिल्प, उद्योग, वाणिज्य, व्यापार एवं नागरीय जीवन, उद्योग धन्धे में कताई–बुनाई, आभूषण, बर्तन और औजार आदि।

प्रस्तावनाः

सिन्धु सभ्यता कालीन शिल्प, उद्योग :

सिन्धु सभ्यता से सम्बद्ध स्थलों पर खुदाई के बाद उन्नत नगर योजना के प्रमाण मिले हैं। लेकिन ऐतिहासिक कालीन इन स्थलों में महज व्यवस्थित मकान, नाली, सड़क, स्नानागार, सभा भवन, देवालय, श्मशान होने के कारण ही इन्हें नगर की संज्ञा नहीं दी जा सकती। बल्कि इन स्थानों से जो अन्य प्रकार के पुरावशेषों की प्राप्ति हुई हैं उसके आधार पर यह धारणा निश्चित होती है कि सिन्धु–सभ्यता काल में शिल्प एवं उद्योगों का प्रचुर विकास हुआ था जिसके कारण इस सभ्यता ने स्वयं को कृषि जीवन एवं संस्कृति से उठाकर नगर जीवन में स्थान बनाया था। हड़प्पा–मोहनजोदड़ो सहित अन्य स्थलों की खुदाई में एक समान वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं जैसे पाषाण प्रौद्योगिकी के अंतर्गत बड़े पैमाने पर समानांतर फलकों का उत्पादन, मनका निर्माण, सेलखड़ी से मुहरों का निर्माण। सोना, चांदी, तांबा, टीन एवं शीशा से बनी वस्तुओं का प्राप्त होना इस बात की ओर संकेत करता है कि उस युग के निवासी धातु–कर्म में निपुण थे।(1) अतः इन विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की प्राप्ति के आधार पर सिन्धु सभ्यता युगीन विभिन्न प्रकार के शिल्पों एवं उद्योगों को रेखांकित किया जा सकता है।

ताम्र उद्योग– सिन्धु सभ्यता काल में ताम्र शिल्प अपने उत्कर्ष के पराकाष्ठा पर पहुँच चुका था। बलूचिस्तान के मुंडीगक एवं कीली गुल मुहम्मद से तांबे के अनेक औजार मिले हैं। इसी प्रकार हड़प्पा संस्कृति से पूर्व के अनेक औजार अमरी, कोटदीजी एवं कालीबंगा में मिले हैं। कालीबंगा में सबसे पहला ताम्बे का कुठार मिला है जिसके विकसित रूप हड़प्पा कालीन संस्कृति में मिलते हैं।[2] सिन्धु सभ्यता स्थलों से तांबे के कुठार, छेनियाँ, चाकू, भाले, तीरों के अग्रभाग, छोटी आरियाँ आदि मिली हैं। संभवतः इन औजारों को बनाने के लिये तांबा राजस्थान से लाया जाता था। सिन्धु संस्कृति में तांबे एवं कांसे के सुंदर बरतन भी बनाये जाते थे। ये बरतन तांबे को पीटकर बनाये जाते थे।[3] सिन्धु सभ्यता के अंतिम दिनों और उसके बाद की संस्कृतियों में अनेक प्रकार के कुठार, छुरे एवं कटार मिले हैं।

दक्षिण भारत में ब्रह्मगिरि, पिकलीहल, मस्की एवं हल्लूर में जो तांबे एवं कांसे के औजार मिले हैं, उनमें प्रमुख छेनियाँ, कुठार और मछली मारने की वंशियाँ हैं। ये सभी औजार सिन्धु संस्कृति से मिले औजारों के अनुरूप है।[4]

स्वर्ण उद्योग– सिन्धु सभ्यता से सोने की भी कुछ वस्तुएँ मिली हैं। कालीबंगा से सोने के मनके मिले हैं। वहीं अन्य स्थानों से भी मनकों के अलावा लटकन, बाजूबंद, जड़ाउ पिन एवं सूइयाँ मिली हैं। इनके सोने में चांदी की मात्रा अधिक होने के कारण इन आभूषणों एवं वस्तुओं के रंग सफेद सा लगते हैं।[5]

चांदी उद्योग– सबसे प्राचीन चांदी की वस्तुएँ सिन्धु सभ्यताओं से ही प्राप्त हुई हैं। चांदी के बड़े बर्तन, और भारी मात्रा में मनके मिले हैं।[6]

मृद्भाण्ड उद्योग– सिन्धु सभ्यता से भारी मात्रा में मिट्टी के बने बरतनों एवं मूर्तियों की प्राप्ति से यह प्रमाणित होता है कि यहाँ मृत्कला अपने चरमोत्कर्ष पर थी। बलूचिस्तान में कीली गुल मुहम्मद में हाथों के बने मिट्टी के बर्तन मिले हैं। इसके बाद के काल में चाक के बने बर्तन बलूचिस्तान में हर जगह मिले हैं। इन बरतनों को लाल या भूरे रंग के घोल से पोता गया है। उन पर काले या लाल रंग की चित्रकारी की गयी है। यहाँ के मृद्भाण्ड ईरान एवं मेसोपोटामिया के मृद्भाण्डों के अनुरूप हैं।[7]
सिन्धु सभ्यता से सम्बद्ध प्रमुख स्थल गुजरात के सौराष्ट्र में मृद्भाण्डों के दो प्रकार मिले हैं। एक हड़प्पा के मृद्भाण्डों के अनुरूप एवं दूसरे वे जो रंगपुर में मिले हैं। इनमें हड़प्पा के मृद्भाण्डो की विशेषताएँ बहुत कम दिखाई देती हैं। इनमें कटोरे एवं हंडियाँ अधिक हैं। ये पैर के चाक से बनाये प्रतीत नहीं होते हैं बल्कि घूमनेवाले चाक से बनाये प्रतीत होते है।[8]

मूर्ति उद्योग– सिन्धु सभ्यता काल में मूर्ति कला अपनी उत्कृष्टता एवं बारीकियों के कारण चरम पर पहुंच चुकी थी । तत्कालीन मूर्तिकला के उदाहरणों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

1. धार्मिक रूप में उपास्य मूर्तियाँ एवं
2. सामान्य सजावटी मूर्तियाँ।

सिन्धु सभ्यता की मूर्तियों के अवलोकन से चार प्रकार की शैलियाँ के विकसित होने का अनुमान होता है–

1. धातुओं को गला कर उन्हें साँचे में डालकर मूर्तियाँ तैयार की जाती थीं।
2. ठप्पा लगाकर मूर्तियाँ बनायी जाती थीं।
3. कच्ची मिट्टी की मूर्तियाँ बनाकर उन्हें आग में पकाकर तैयार किया जाता था।
4. छेनी द्वारा पत्थरों को तराश कर मूर्तियाँ बनायी जाती थीं।

हड़प्पा–मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर्तकी मूर्ति, पुजारी मूर्ति, योगी मूर्ति आदि की उत्कृष्टता देखकर प्राचीन भारतीय मूर्तिकला की बारीकीयों पर गर्व होता है।[9]

वस्त्र उद्योग– मोहनजोदड़ो में जहाँ रंगे एवं बुने हुए कपास के कपड़ों के कुछ अवशेष मिले हैं । वहीं मृद्भाण्डों पर भी कपड़ों के निशान मिले हैं।[10] इतना ही नहीं इन स्थलों से प्राप्त मूर्तियों की बनावट एवं उनके पहनावे–ओढ़ावे से उनके पोशाकों का भी पता चलता है कि उस समय वस्त्र उद्योग कितना उन्नत था। पुरुषों का दुपट्टा, महिलाओं . का घाघरा एवं अंगरखा जैसे वस्त्र आदि सबों के विन्यास से पता चलता है कि उस समय वस्त्र उद्योग समुन्नत अवस्था में थे। सूती एवं ऊनी दोनों प्रकार के कपड़े शिल्पकार बनाया करते थे।[11]

हाथी दाँत एवं सीप उद्योग– हड़प्पा–मोहनजोदड़ो की सभ्यताओं से हाथी दाँत की बनी विभिन्न वस्तुएँ यथा कंघे, वक्राकार बेलन, छोटी छड़ियाँ, पिन आदि मिली हैं। वही सीप के सितारे मिले हैं जिन्हें पाजेब एवं मनकों में जड़ा जाता था।[12]

मनका उद्योग– विभिन्न प्रकार के उपरत्नों से सिन्धु संस्कृति में अनेक प्रकार के मनके बनाये जाते थे। चहुन्दड़ो एवं लोथल में मनके बनाने के कारखाने एवं उनके विक्रय केन्द्र मिले हैं। पुराविदों का अनुमान है कि कार्निलियन जैसे उपरत्न से बने मनकों का यहाँ से विदेशों में निर्यात किया जाता था।[13]

मोहर उद्योग– सिन्धु सभ्यता के विभिन्न स्थलों से अब तक पाँच सौ से अधिक मुहरें प्राप्त हो चुकी हैं। इस आधार पर यह कहने का आधार बनता है कि इस काल में सेलखड़ी एवं अन्य वस्तुओं से उत्कृष्ट एवं कलात्मक मुहरें बनाने का शिल्प बहुत ही अधिक विकसित था। सेलखड़ी से मनके, पाजेब, बटन एवं बर्तन भी बनाये जाते थे।[14]

सिन्धु सभ्यता कालीन वाणिज्य एवं व्यापार :
सिन्धु सभ्यता से प्राप्त वस्तुओं की प्राप्ति विश्व की अन्य सभ्यताओं की खुदाई से होने एवं स्वयं सिन्धु सभ्यता के स्थलों से कुछ बाह्य निर्मित वस्तुओं की प्राप्ति से यह कहने का पुख्ता आधार बनता है कि सिन्धु सभ्यता काल में वाणिज्य एवं व्यापार की स्थिति समुन्नत थी।
सिन्धु सभ्यता में शिल्पियों द्वारा निर्मित में बनी वस्तुओं में इतनी अधिक सुगढ़ता पुराविदों को देखने को मिली हैं जिस आधार पर वे लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि शिल्प एवं उद्योग इस संस्कृति में पूर्णतया संगठित थे एवं वस्तुओं के वितरण की प्रणाली सुव्यवस्थित थी। विशिष्ट पत्थर एक स्थान से लाकर अनेक स्थानों पर एक ही प्रकार के औजार बनाये जाते थे। इसी प्रकार बटखारे, मनकें मुहरें आदि कुछ नगरों में बनाये जाते थे एवं सिन्धु सभ्यता के पूरे क्षेत्र में उनका वितरण किया जाता था।[15]
व्यापार के लिये विनिमय की दरों, बटखारों एवं नाप का नियमित करना आवश्यक था। मुहरों का प्रयोग संभवतः कपड़ों की गाँठों में लगाने में किया जाता था। इतिहासकारों का अनुमान है कि लोथल से सिन्धु सभ्यता में उत्पादित वस्तुओं का निर्यात समुद्र द्वारा अन्य स्थानों पर किया जाता था। पत्थर के फलक, मुहरें, मनके आदि नदियों के रास्ते लाये जाते थे। इस बात पर इतिहासकारों में एकमत है कि इस सभ्यता के निवासियों का व्यापार महज उनके अपने साम्राज्य तक ही सीमित नहीं था। इतिहासकारों का अनुमान है कि सोना मैसूर की खानों से लाया जाता था। चांदी का आयात अफगानिस्तान से किया जाता था। तांबा राजस्थान, बलूचिस्तान और अरब से लाया जाता था। सीसा पूर्वी भारत एवं दक्षिणी भारत से आता था। लाजवर्द का आयात उत्तरी पूर्वी अफगानिस्तान के बदख्शाँ प्रदेशो से किया जाता था। गोमेद, केलसेडोनी और इन्द्रगोप जैसे उपरत्नों को महाराष्ट्र से एवं जेड मध्य एशिया से लाया जाता था। इस प्रकार सिन्धु सभ्यता का व्यापार क्षेत्र बहुत ही विस्तृत था।[16]

विदेशी व्यापार– सिन्धु सभ्यता का अपने समकालीन विश्व की कई सभ्यताओं के साथ व्यापारिक सम्बन्ध था। मेसोपोटामिया के साथ सिन्धु सभ्यता के पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनों प्रकार के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। पुरातात्विक साक्ष्य में दो दर्जन ऐसे मुहरे हैं जो हड़प्पा से प्राप्त मुहरों के समरूप है जो सूसा एवं मेसोपोटामिया के अन्य नगरों से मिली हैं। मेसोपोटामिया सभ्यता के उत्खनन में वहाँ से इन्द्रगोप के मनके, सीपी एवं हड्डी की जड़ाई की हुई वस्तुएँ आदि जो मिली हैं उनके सम्बन्ध में इतिहासकारों की स्पष्ट धारणा है कि ये सब भारत से निर्यात की गयी होंगी।[17] सिन्धु घाटी में मेसोपोटामिया से प्राप्त मुहरों के

समान तीन की संख्या में बेलनाकार मुहरें मिली हैं। इतिहासकारों का अनुमान है कि भारत से कपास, मसाले, लकड़ी के समान मेसोपोटामिया ले जाये जाते होंगे। लोथल में बटन के आकार की एक मुहर मिली थी जिसका आकार–प्रकार ईरान की खाड़ी में प्राप्त मुहरों के समान था। लोथल में ही गोल रोटी के आकार की तांबे की एक सिल्ली मिली थी जिसके संबन्ध में इतिहासकारों का अनुमान है कि वह निश्चय ही विदेश से लायी गयी होंगी। [18]

सिन्धु सभ्यता के विदेशों के साथ व्यापार के अभिलेखीय प्रमाण भी प्राप्त होते हैं। अगेड के सारगन के सम काल (ईसापूर्व 2300) में ऊँट के व्यापारी अनेक विदेशी राज्यों के साथ व्यापार करते थे। इन विदेशी राज्यों में जिन नगरों से इनका व्यापार चलता था उनके एक स्थान का नाम मेलूहा था जिसकी पहचान भारत के उत्तरी–पश्चिमी किसी बंदरगाह से की गयी है। मेलूहा से अनेक प्रकार की लकड़ियाँ (आबनूस सहित), तांबा, सोना, इंद्र गोप, हाथी के दाँत एवं मोती मेसोपोटामिया ले जाये जाते थे। [19]

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहरों पर जहाजों की आकृतिया बनी हुई हैं, वही लोथल से पकी मिट्टी की जहान की अनुकृतियाँ मिली हैं। यह बात इसका प्रमाण है कि सिन्धु सभ्यता काल में मालवाहक जहाज बनाये जाते थे जिन पर चढ़कर व्यापारी दूर–दूर के देशों तक जाकर व्यापार करते थे। लोथल में मिले गोदी–बाड़ा से भी यह बात प्रमाणित होती है कि समुद्र द्वारा विदेशों से व्यापार होता था। देश के अंदर बैलगाड़ियों एवं नदियों में नावों द्वारा व्यापारिक वस्तुएँ ले जायी जाती थीं। [20]

सेलखड़ी से बनी नावों की अनुकृति, मुहरों एवं इन्द्रगोप के मनकों से स्पष्ट है कि भारत का सिन्धु सभ्यता के काल में सुमेर, एलम, टाइलोस आदि स्थानों से व्यापार होता था। सिन्धु घाटी के क्षेत्र से पश्चिमी एशिया को सूती कपड़े भेजे जाते थे। इसके लिये पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं। [21] यह व्यापार स्थल एवं समुद्र दोनों मार्गों से होता था। [22]

सिन्धु सभ्यता कालीन नगरीय जीवन :

सिन्धु सभ्यता को केवल वैज्ञानिक तरीके से बने आवास, सड़क, नाली ने ही नगर नहीं बनाया, बल्कि नगर बनाने में यहाँ के उद्योग एवं व्यापार ने महती भूमिका निभायी। सिन्धु सभ्यता काल से पाषाण, धातु, मिट्टी सेलखड़ी, लकड़ी, कपास, अस्थियाँ, आदि विभिन्न वस्तुओं से रंग–बिरंग के जीवनोपयोगी सामान बनाने के उद्योग बड़े पैमाने पर विकसित हो चुके थे। इन वस्तुओं का उपयोग यहाँ के निवासी स्वयं भी करते थे एवं इनका निर्यात भी किया जाता था। फलतः इस सभ्यता काल में शिल्पियों, कारीगरों एवं व्यापारिक समुदाय की एक बहुत बड़ी जमात ही खड़ी हो गयी थी। इस उद्योग एवं व्यापर ने सिन्धु सभ्यता की बस्तियों की एक सम्पूर्ण नगर की पहचान प्रदान की।

सिन्धु संस्कृति के नगरों में स्पष्ट रूप से कार्य के आधार पर नागरिकों का एक वर्गीकरण हो चला था। नगर में अनेक वर्ग थे जैसे– पदाधिकारी, पुरोहित, राजकीय कर्मचारी, चिकित्सक, व्यापारी, व्यवसायी, श्रमिक, स्वर्णकार, धातुकार, कुंभकार, बुनकर, कृषक इत्यादि। इन विभिन्न कार्य क्षेत्रों से जुड़े लोगों के आधार पर सिन्धु संस्कृति के नगरीय जीवन का विभाजन निम्न चार वर्गों में किया जा सकता है। [23]

1. **विद्वान या बौद्धिक वर्ग–** इस वर्ग के अंतर्गत पुरोहित, वैद्य, ज्योतिष आदि थे।
2. **राजकीय पदाधिकारी वर्ग–** इस वर्ग के अंतर्गत राज्य के उच्च पदाधिकारी, कर्मचारी, सैनिक, योद्धा आदि आते थे।
3. **व्यापारी–व्यवसायी वर्ग–** इस वर्ग के अंतर्गत समाज के व्यापारिक समुदाय, व्यवसायी, उद्योगपति तथा धनी वर्ग आते थे।
4. **श्रमिक–कारीकर वर्ग–** इस वर्ग के अंतर्गत वैसे लोग आते थे जो अपना जीविकोपार्जन शारीरिक श्रम तथा हस्तकौशल आदि के माध्यम से किया करते थे। कुंभकार, स्वर्णकार, ताम्रकार, कांस्यकार, बुनकर, कृषक, कर्मकार आदि प्रकार के समस्त शिल्पी एवं कारीगर इसी वर्ग में आते थे।

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक काल में सिन्धु सभ्यता के समय से भारत में एक सम्पूर्ण नगर एवं नागरिक जीवन की अवधारणा विकसित हुई। पाषाण एवं ताम्र काल में नदी तटों पर आद्य मानवों ने जिस मानव यभ्यता का बीजारोपण किया वह सिन्धु सभ्यता काल में आकर फला–फूला। कोई नगर बस भवनों के सुनियोजित निर्माण से ही नगर कहलाने का अधिकारी नहीं हो जाता है। नगर कहलाने के लिये वहाँ समुन्नता उद्योग–धंधे एवं वाणिज्य–व्यवसाय भी होने चाहिए। नगर होने के इन दो आवश्यक शर्तों को अत्यंत ही योजनाबद्ध ढंग से सिन्धु सभ्यता काल में न केवल विकसित किया गया बल्कि इन्हें एक मुकाम तक पहुँचाया गया। सिन्धु सभ्यता कालीन शिल्प, उद्योग–धंधे एवं वाणिज्य–व्यापार ने देश के साथ–साथ विदेशों तक अपनी धाख जमायी। सिन्धु सभ्यता के माल विदेशों तक पहुँचे। इस प्रकार विदेशों में सिन्धु सभ्यता वाली बस्तियों की पहचान एक नगर के रूप में हो सकी। जाहिर है कि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा आदि जैसी समस्त सिन्धु सभ्यता युगीन बस्तियाँ भारत की आद्य नगरियाँ थीं जिनकी पहचान विदेशों तक थी और इन नगरों को नगर की गरिमा एवं मर्यादा प्रदान करने में उद्योगों एवं वाणिज्य–व्यापार ने प्रमुख भूमिका निभायी।

संदर्भ

1. प्राचीन भारत का इतिहास, सं.– द्विजेन्द्र नारायण झा एवं कृष्ण मोहन श्रीमाली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1995, पृ.– 94–95
2. त्रिजेट एंड रेमंड आलचिन, द बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेसन, लंदन, 1942, पृ.– 280–281
3. वही, पृ.– 280
4. वही, पृ.– 283
5. वही, पृ.– 284
6. वही, पृ.– 285
7. ओमप्रकाश, प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास, वाइली ईस्टर्न लिमिटेड, नई दिल्ली, 1986, पृ.– 78
8. त्रिजेट एंड रेमंड आलचिन, द बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेसन, लंदन, 1942, पृ.– 290
9. डी.डी. कोशाम्बी, द कल्चर एंड सिविलाइजेसन ऑफ एनसिऐंट इंडिया इन हिस्टोरिकल आउट लाइन, लंदन, 1962, पृ.– 480
10. त्रिजेट एंड रेमंड आलचिन, द बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेसन, लंदन, 1942, पृ.– 293
11. विद्याधर महाजन, प्राचीन भारत का इतिहास, एस. चंद एंड कंपनी लि., रामनगर, नई दिल्ली, 1986, पृ.– 53
12. त्रिजेट एंड रेमंड आलचिन, द बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेसन, लंदन, 1942, पृ.– 294
13. वही, पृ.– 294–295
14. वही, पृ.– 295
15. वही, पृ.– 268–269
16. वही, पृ.– 270
17. वही, पृ.– 271
18. वही, पृ.– 271
19. वही, पृ.– 271
20. वही, पृ.– 271–272
21. वही, पृ.– 270
22. फर्दर मैके, एक्सकेवेसंस एट मोहनजोदड़ो, फुट नोट्स सं.– 8, ओमप्रकाश, प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास, वाइली ईस्टर्न लिमिटेड, नई दिल्ली, 1986, पृ.– 100)
23. ईश्वरी प्रसाद, प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म तथा दर्शन, मीनू पब्लिकेसंस, इलाहाबाद, 1986, पृ.– 27–28